lR;] U;k;] R;kx vkj ize %vkpk;l egkJe.k dyok 17-9-2011

vkpk;l egkJe.k th us g, dgk fd n'k dk urRo djus okyk] 'kklu djus okyk ufrd ,o bekunkj gkuk pkfg,A lE;d n'ku Kku pfj= dk ;kx gkus ij ek{k ikIr gkrk gA rhuk d feyus l ek{k ekxl dk fuek.k gkrk gA ri dk vyx l foo{k.k djrs g rk pkj lk/ku gA tgk vPNk 0;ogkj g vPNk vkpj.k g rk ogk 'kkfr jgrh gA ek{k rk nj dh ckr gA ;gh ij ek{k gk ldrk g rk ftUgkus dke vkj v/kdkj gk u"V fd;k tk ldrk g] 0;ogkj vkj vkpj.k 'kCn l lR;] U;k;] R;kx vkj ize ;s pkj 0;k[;kuA fo|kfFk;k d ,s l lLdkj gk mues lR;] U;k;] R;kx vkj ize dk ikfIr lLdkj o/; gk tgk ,s lk gkrk g ogk n{kk e 'kkfr LFkkfir gk ldrh gAधर्म एवं साधना में वे वह इस तरह की उपासना करें कि मोक्ष में जाने का लक्ष्य और मार्ग सहज ही उपलब्ध हो जाए। चेतना और शरीर के अंतर को परिभाषित करते हुए कहा कि दोनों के स्वरुप में भिन्नता है। चेतना का स्थायी व शरीर को अस्थायी माना गया है। शरीर के बिना आदमी का जीवन नहीं है वहीं चेतना के बिना धर्म का संयोग नहीं बन पाता। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव अपने कर्मों पर विश्वास करना चाहिए नेक व अच्छे कर्म करने में विश्वास करे। मन ही मनुष्य के बंधन और कर्मों को उजागर करता है। जैसा भाव होगा, मनुष्य का कर्म भी उसी अनुरुप सामने आएगा। जन्म–मरण का चक्र हमेशा चलता रहता है। उन्होंने कहा कि नास्तिकवाद का सिद्धांत है शरीर और आत्मा। एक है आसक्तिवाद दोनों अलग–अलग है। मन अहंकार मुक्त होगा तो उसे धर्म लगन हो सकेगी। अहंकार का भाव साधना और तपस्या में सबसे बडा बाधक है। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए साधना करनी आवश्यक है। मनुष्य को हमेशा अपने गुरु के चरणों में कठोर तपस्या करनी चाहिए। एकांत में की गई साधना और इंद्रियों पर काबू पाने का अभ्यास भी शास्त्रों में मोक्ष मार्ग पर जाना बताया गया है। मन अहंकार मुक्त होगा तो उसे धर्म लगन हो सकेगी। अहंकार का भाव साधना और तपस्या में सबसे बडा बाधक है। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए साधना करनी आवश्यक है। मनुष्य को हमेशा अपने गुरु के चरणों में कठोर तपस्या करनी चाहिए। एकांत में की गई साधना और इंद्रियों पर काबू पाने का अभ्यास भी शास्त्रों में मोक्ष मार्ग पर जाना बताया गया है।

मन अहंकार मुक्त होगा तो उसे धर्म लगन हो सकेगी। अहंकार का भाव साधना और तपस्या में सबसे बडा बाधक है। मोक्ष को प्राप्त करने के लिए साधना करनी आवश्यक है। मनुष्य को हमेशा अपने गुरु के चरणों में कठोर तपस्या करनी चाहिए। एकांत में की गई साधना और इंद्रियों पर काबू पाने का अभ्यास भी शास्त्रों में मोक्ष मार्ग पर जाना बताया गया है।

Hkfo"; e dkbl cPpk gh rk cMk gkdj n'k dk urRo djxkA tc Hkkohih<h e ufrdrk d ifr fu"Bk gkxh] bekunkjh e fo'okl gkxk vkj dk;l {kerk gk rk Hkfo"; mTtoy gkxkA mUgkus dgk fd jktuhfr e tkuk cjh ckr ugh gA mle pfj= dh eY;ork cuh jg] Hk"Vkpkj dk eY; u n bl ckr dh vi{kk gA

स्वयं का जीवन धर्ममय हो

मंत्री मुनी सुमेरमल ने कहा कि अनेक लोग आते है,अनेक जाते है। पर उन्हें कुछ न कुछ सवस्टी की होती है। यह यह आचार्यो का अतिषय है सम्पक दर्शन ज्ञान चरित्र का पात्र होता है हन तीनो के मिलने से मोक्ष मार्ग का निमार्ण होता है। तप को अलग से विवक्षण करते है,तो चार साधन है। जहा अच्छा व्यवहार है,अच्छा आचार है। तो वहा शांति रहती है। पर मोक्ष तो दूर की बात है,

अणुव्रती बनने से कम से कम उसका वर्तमान जीवन तो सुधर सकता है।जीवन उतार–चडाव का परिचायक है। इसमें अनुकूलता और प्रतिकूलता की स्थिति प्रायः बनती है। प्रतिकूलता को देखकर

उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हालात से सामना करने का प्रयास करें। प्रत्येक अंधेरे के बाद जीवन में प्रभात होता है। अनुकूलता को सहन करने की शक्ति है तो विपरित स्थितियों का भी बखूबी सामना करना चाहिए। उन्होंने उदारता को स्पष्ट करते हुए कहा कि जो हम सोचते है वैसा कर नहीं पाते और जैसा नहीं करना चाहते वैसा हमसे हो जाता है। यह मानव जीवन की प्रवृति है। धर्म साथ रहेगा तो दूसरे लोगों को भी इसकी प्रेरणा मिलती रहेगी। स्वयं का जीवन धर्ममय हो जाएगा।

2011

कोलकाता की एक ही राशि
कि यह धरती क्यों है प्यार